आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक: -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2513 • उदयपुर, गुरुवार 11 नवम्बर, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

फिर जुड़ेंगे... बिखरे सपने

अनिल की जिंदगी में सबकुछ ठीक चल रहा था कि एक हादसे ने उसके सारे सपने बिखेर दिए। वह निर्माण कार्यो पर वेलदारी करके अपने वृद्ध पिता को परिवार पालन में मदद करता था। कभी–कभी कुदरत किसी के साथ ऐसा कर जाती है कि व्यक्ति टूट जाता है।

राजगढ़ (मध्यप्रदेश) निवासी किसान शिवनारायण वर्मा के पुत्र अनिल (23) के साथ ऐसा ही हुआ। एक साल पहले तक वह मजदूरी करते हुए जल्दी ही अपना घर–संसार बसाने का सपना देख रहा था। एक दिन अपने कार्यस्थल पर काम करते हुए अचानक करंट लगा और वो बेसुध होकर गिर पड़ा वहां मौजूद लोग व उनका भाई तत्काल निकटवर्ती जावरा के सिविल हॉस्पीटल लेकर पहुंचे। प्राथमिक उपचार के बाद हादसे की गंभीरता को देखते हुए उन्हें भोपाल के बड़े अस्पताल के लिए रैफर किया गया। जहां करीब दो महीने तक इलाज चला लेकिन दोनों हाथ और एक पैर को काटकर ही जिंदगी को बचाया जा सका।

यह स्थिति अनिल व उसके परिवार के लिए अत्यंत दुःखदायी थी। आत्मनिर्भर अनिल अब दूसरों के सहारे था। आंखों से हरदम आंसू टपकते थे। भविष्य अंधकार में था। इलाज के बाद घर लौटने पर पिता और माँ नवरंग बाई कितना ही दिलासा देते किंतु अनिल की आंखे शून्य में ही खोई रहती थी। करीब 10–11 महीने बाद वर्मा परिवार के किसी परिचित ने अनिल को कृत्रिम हाथ–पैर लगवाने की सलाह दी।

किंतु गरीबी आड़े आ रही थी। उसी व्यक्ति ने एक दिन फिर उसे अपनी बात याद दिलाते हुए उदयपुर के नारायण सेवा संस्थान जाने के लिए कहा। जहां निःशुल्क आधुनिक तकनीक पर आधारित कृत्रिम अंग लगाए जाते हैं। अनिल अपने पिता के साथ 30 सितंबर को उदयपुर आए जहां करीब एक सप्ताह के आवास के दौरान उनके कृत्रिम अंग लगाए गए। जिनके सहारे अब वे उठते–बैठते और धीरे–धीरे चलते भी हैं। अनिल ने संस्थान से लौटते हुए कहा कि 'वह अपने बिखरे हुए सपनों को फिर से जोड़ने की कोशिश तो करेगा ही बुजुर्ग मां–बाप का सहारा भी बनेगा।

अंधेरे से उबरा संदीप

पुत्र के जन्म पर परिवार और सगे–संबंधियों में खुशी की लहर थी। लेकिन यह खुशी तब दुःख में तब्दील हो गई, जब पता चला कि बच्चा जन्म से ही पोलियो का शिकार है। इसके दोनों पांव कमजोर, टेढ़े और घुटनों के पास सटे हुए थे। आस–पास के अस्पतालों में भी दिखाया और उपचार भी हुआ लेकिन कोई लाभ न मिला। किसी बड़े अस्पताल में जाना गरीबी के कारण संभव भी नहीं था। यह त्रासदायी दास्तान है बिहार के पश्चिमी चमपारण जिले के गांव मगरोहा में रहने वाले पिता सुनील कुमार की। बालक संदीप जन्मजात दिव्यांगता के दुःख को लेकर उम्र के सोपान चढ़ता हुआ चौदह बरस का हो गया। माता–पिता ने गोदी में उठाकर उसे दूसरी कक्षा तक पढ़ाई कराई लेकिन बच्चे के आगे का भविष्य गरीबी और दिव्यांगता के कारण उन्हें अंधेरे में ही दिखाई देता था।

माता–पिता दिहाड़ी मजदूर हैं और बच्चे–बच्चियों सहित पांच सदस्यों के परिवार का पोषण करते है। एक दिन उन्हें किसी रिश्तेदार ने सलाह दी की वे बच्चे को राजस्थान के उदयपुर शहर स्थित नारायण सेवा संस्थान में लेकर जाए, जहां इस तरह की बीमारी के निःशुल्क ऑपरेशन होते हैं। उसने इन्हें ये भी बताया कि वह खुद भी इस बीमारी का शिकार था। वहां जाने के बाद अब चलता हूं और अपने दैनन्दिन काम भी बिना सहारे आसानी से कर लेता हूं। सुनील बताते हैं कि वे बच्चे को लेकर 2018 में संस्थान में आए जहां डॉ. अंकित चौहान ने उनकी जांच कर बच्चे के पांव का पहला ऑपरेशन किया। इसके बाद 15 सितम्बर, 2021 के बीच कुल 4 ऑपरेशन हुए। संदीप अब पहले से ज्यादा खुश रहता है और चलता भी है। माता–पिता अपने सिर का बोझ हल्का करने के लिए संस्थान का बारम्बार आभार जताते हैं।

समावेशी और समान शिक्षा का अभियान

राज्य सरकार के निर्देशों के बाद अक्टूबर 2021 से नारायण चिल्ड्रन एकेडमी में करीब डेढ़ वर्ष बाद फिर से बच्चों की चहल–पहल शुरू हो गई है। न केवल बच्चों के अपितु उनके अभिभावकों के चेहरे पर भी मुसकान है। कोविड–19 के चलते एकेडमी पिछले डेढ़ वर्ष से बंद थी किंतु बच्चों के भविष्य को देखते हुए संस्थान ने 'घर से ही सीखें' अभियान के तहत शिक्षा की क्रमबद्धता को नियमित रखा।

नारायण चिल्ड्रन एकेडमी व वंचित बच्चों को मुफ्त अत्याधुनिक शिक्षा देने वाला एक चैरेटी स्कूल है। जहां किताबे, स्टेशनरी, पोषक, अल्पाहार, भोजन आदि की सुविधाएं भी निःशुल्क हैं। बड़ी ग्राम स्थित हरी–भरी पहाड़ियों की गोद में स्थित संस्थान के सेवामहातीर्थ परिसर में यह विद्यालय अवस्थित है, जहां अनुभवी एवं प्रशिक्षित अध्यापकों द्वारा शिक्षा दी जाती है। इसका मुख्य उद्देश्य कमजोर तबके के बालकों का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित करना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 पर आधारित यह स्कूल वर्तमान में प्राथमिक स्तर का है। जिसे भविष्य में सी.बी.एस. ई में कक्षा 12वीं तक अपग्रेड करने की योजना है।

भक्ति में भाव सर्वोपरि

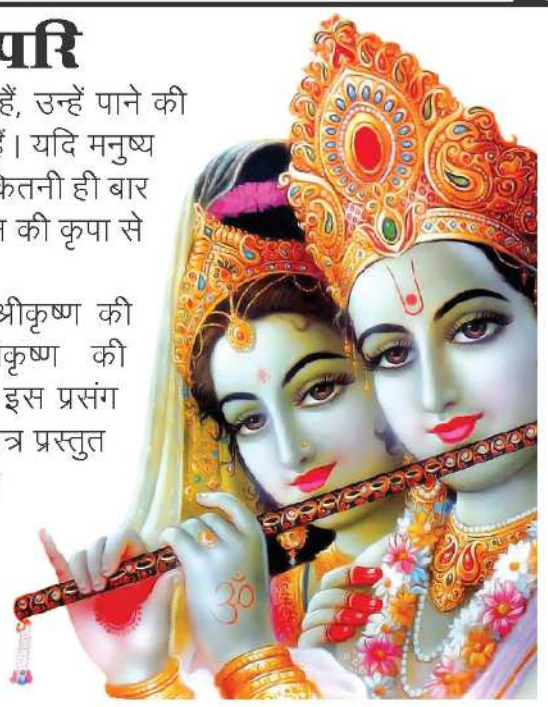

भगवान हमेशा भाव को ग्रहण करते हैं, उन्हें पाने की इच्छा मात्र से ही विकार स्वतः मिट जाते हैं। यदि मनुष्य में उनके प्रति व्याकुलता नहीं है तो चाहे कितनी ही बार उनकी लीला–कथाएं सुने, लेकिन भगवान की कृपा से वह वंचित ही रहेगा।

पंडित जी किसी गांव में भगवान श्रीकृष्ण की कथा सुना रहे थे। प्रसंग था–गोपाल श्रीकृष्ण की बाल लीलाएं और उनके जीवन आदर्श। इस प्रसंग में उन्होंने श्रीकृष्ण का बहुत सुन्दर भावचित्र प्रस्तुत किया जिसमें उन्होंने अनेक विलक्षण आभूषणों की भी चर्चा की। कथा सुन रहे असंख्य श्रोताओं में एक डाकू भी था। कथा समापन के बाद पंडित जी अपनी पोथी और भक्तों द्वारा आई भेंट को एक गठरी में बांधा और अपने गांव की ओर चल पड़े। डाकू भी उनके पीछे हो लिया। कुछ दूर जाने पर डाकू ने पंडित जी को रूकने के लिए कहा, वे रूक गए। उसने पडित जी कहा, 'मैं चोर–डाकू हूं। आपने कथा में जिस गोपाल और उसके आभूषणों का वर्णन किया है, क्या आप उसे जानते है? 'यदि जानते है तो बताइए, अन्यथा मैं आपका सामान लूट लूंगा।' पंडित जी ने कहा, 'मैं उनका पता जरूर बताउंगा, लेकिन इससे पहले यह गठरी मेरे घर तक ले चलो।' पंडित जी ने कथा की पोथी और भेंट सामग्री की गठरी उसके सर पर दी।

पंडित जी ने घर पहुंचने के बाद उससे कहा कि गोपाल मथुरा और वृदावन में रहते है। वहीं जाकर तुम्हें उन्हें खोजना होगा। डाकू मथुरा–वृदावन के लिए रवाना हुआ। उसने वहां गोपाल को खोजा लेकिन वह नहीं मिला। भूखे–प्यासे रहकर भी उसने खोज जारी रखी।

एक दिन उसे एक सुंदर नन्हा सा बालक कुछ गायों को चराता हुआ दिखा। उसकी मनमोहक छवि पर डाकू इतना मोहित हो गया कि वह उसे एकटक उसे देखता रहा। यही बालक श्रीकृष्ण थे, जिन्होंने अपने प्रति डाकू के भाव देखकर उसे दर्शन दिए। वह उस बालक से बोला, 'मैं इस छवि को हमेशा देखना चाहता हूं। बालक ने कहा, 'जैसी तुम्हारी इच्छा।' उस दिन के बाद यकायक डाकू का हृदय परिवर्तन हो गया और वह कृष्णभक्त बन गया मृत्युपरांत परमधाम को प्राप्त हुआ।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

हमारे स्वामी ज्ञानदास जी महाराज जिन्होंने 2010 में मुझे अलंकृत किया था। आचार्य महामण्डलेश्वर निवार्णी पीठाधीश्वर के पद पर। मैं छोटा सा आदमी, साधारण सा आदमी, मैं भीण्डर गाँव का आदमी। मैं ऐसा व्यक्ति जिसकी कोई राजनीतिक विरासत नहीं, आर्थिक भी नहीं। मेरे पूज्य पिताजी ने धर्म का संग्रह किया था। मेरे पूज्य पिताजी ने हमे बताया था– ये सहस्त्रार चक्र जागृत रखना। अपने माथे को ठंडा रखना। अपनी वाणी को शीतल रखना। उन्होंने उस जमाने में 9 साल की उम्र में, जब मुझे एक पाई कहीं गिर गई थी। मुझे मेरे ताऊजी का बड़ा डर लग रहा था। ताऊजी दुकान से निकाल देंगे। पिताजी को मैंने जा के कहा। पिताजी ने कहा – तू जाजम को पकड़े रखना। ये जाजम ! ये चदंन, जैसे मान लो दुकान की जाजम है। आज तो कुर्सी – टेबल का युग आ गया। कुछ अग्रेंजी स्कूल वाले बच्चे जाजम को नहीं समझते। जाजम का मतलब दरी अर्थात् बैठने का। आप नीचे बैठे हैं किसी पे बैठे है। उन्होंने कहा– जाजम को पकड़े रखना। और ताऊजी कितना भी गुस्सा करे तु जाजम मत छोड़ना। तू दुकान छोड़कर मत जाना।

ऐसा सहस्त्रार चक्र। ये ही वो चक्र जो हमें झाडोल ले गया। झाड़ोल में क्या पाया? हजारो व्यक्ति किसी के मुँह में से खून आ रहा है। अरे! इसके तो दो– तीन दिन से मुँह से खून आ रहा है। कई बार खून आ जाता है। अरे! इसके घुटनों में कमजोरी आ गई। अरे! इसका पेट दर्द बहुत कर रहा है। अरे! इसके हाथ की अंगुलियो में कटाव हो गया हैं, फोड़ा हो गया, पाईल्स हो गया। अरे! इसको बुखार बहुत आ रहा है टाईफाईड हो गया। हजारों करीबन डेढ़ हजार लोग। और 14 करीबन डॉक्टर साहब, मैं बड़ी कृपा मानता हूँ। आर. के. पामेचा साहब की, मैं उनका जीवन में कभी उपकार नहीं भूल सकता। भूलना भी नहीं चाहिये। जिन्होंने कभी आपके एक कदम बढ़ के उपकार किया हो, जिदंगी भर उनका उपकार मानिये। उनके प्रति कृतज्ञ केवल शब्दों से नहीं रहना। उनके काम भी आइये।

सेवा का यह काम आपके सहयोग के बिना कैसे होगा सम्भव

NARAYAN HOSPITALS

पशुवत जिन्दगी जी रहे दिव्यांग भाई बहिनों को अपने पांवों पर चलाने के लिए कृपया करें योगदान

ऑपरेशन	सहयोग राशि (रूपये)	ऑपरेशन	सहयोग राशि (रूपये)
501	1700000	40	151000
401	1401000	13	52500
301	1051000	05	21000
201	711000	03	13000
101	361000	01	5000

NARAYAN LIMBS & CALIPERS

रेंग रेंग कर चलने वाले दिव्यांगजनों को सहायक उपकरणों का सहयोग देकर बनाये सशक्त

सहायक उपकरण विवरण	सहयोग राशि (रूपये)
कृत्रिम अंग	10000
ट्राई साईकिल	5000
व्हील चेयर	4000
केलिपर	2000
बैसाखी	500

NARAYAN VOCATIONAL ACADEMY

दिव्यांगों को स्वावलम्बी बनाने के लिए संस्थान द्वारा दिये जा रहे प्रशिक्षणों में आपका अनुदान हो

मोबाईल / कम्प्युटर / सिलाई / मेहन्दी प्रशिक्षण सोजन्य राशि	
30 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग – 225000 रू.	5 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग – 37500 रू.
20 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग – 150000 रू.	3 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग – 22500 रू.
10 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग – 75000 रू.	1 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग – 7500 रू.

दान सहयोग हेतु सम्पर्क करें - 0294-6622222, 7023509999

NARAYAN PARA SPORTS ACADEMY

प्रतिभावान दिव्यांग बन्धुओं को खेल प्रशिक्षण देने तथा खेल अकादमी स्थापित करने के लिए कृपया करें मदद

निर्माण सहयोगी बनें	51000 रू.

NARAYAN ROTI

प्यासे को पानी, भुखें को भोजन, बीमार को दवा, यही है नारायण सेवा– कृपया करें भोजन सेवा

विवरण (प्रतिदिन)	सहयोग राशि (रूपये)
नाश्ता, दोपहर व रात्रि भोजन सहयोग	37000
दोपहर व रात्रि भोजन सहयोग	30000
दोपहर अथवा रात का भोजन सहयोग	15000
केवल नाश्ता सहयोग	7000

वर्ष में एक दिन 151 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चो के लिए भोजन सहयोग

NARAYAN EDUCATION ACADEMY

कृपया विद्या का दान देकर गरीब बच्चों का करे उद्धार

प्रति छात्र शिक्षा सहयोग (प्रति वर्ष)	36000 रू.
प्रति छात्र शिक्षा सहयोग (प्रति माह)	3000 रू.

NARAYAN APNA GHAR

जिनका कोई नही है इस दुनिया में..... ऐसे अनाथ बच्चों को ले गोद और उनकी शिक्षा में करें मदद

प्रति बालक (18 वर्ष तक) सहयोग	100000 रू.

NARAYAN COMMUNITY SEVA

दूरस्थ एवं आदिवासी क्षेत्रों में संस्थान की ओर से चलाई जा रही राशन वितरण, वस्त्र एवं पोशाक सेवा में मदद करें

50 मजदूर परिवार	100000 रू.
25 मजदूर परिवार	50000 रू.
5 मजदूर परिवार	10000 रू.
3 मजदूर परिवार	6000 रू.
1 मजदूर परिवार	2000 रू.

कैलाश 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन

समाज में हेय दृष्टी से देखे जाने वाले दिव्यांग बन्धुंओं को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए हम कृतसंकल्परत है कृपया सामाजिक सेवा में आप भी हमारे साथ आये।

प्रशांत अग्रवाल
अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष

सम्पादकीय

मानवता एक सद्‌गुण है जो हरेक मानव में अपेक्षित है। मानवता के मानदण्डों में किसे–किसे रखा जाय यह निर्विवाद है। मानव का एक गुण है परोपकार। जो केवल अपने लिये सोचे वह पशु कहा गया है और जो सर्वहित में सोचे वह मानव। यह स्व और परहित क्या है? यहाँ यह भी सोचना आवश्यक है कि स्वहित और परहित कोई विरोधी भाव नहीं है। पर जो स्वहित में ही लीन रहता है वह सीमति हो जाता है जबकि परहित वाला परार्थ तो साध ही लेता है पर साथ–साथ स्वहित भी सध जाता है। औरों के लिये कुछ करेंगे तो मन की निर्मलता प्रकट होगी। त्याग का भाव उत्पन्न होगा तथा स्व को परिधि व पर को केन्द्र में रखने का स्वभाव बनेगा। यही स्वभाव मानवता को सिद्ध करता है। मानव के लिये मानवता एक अनिवार्य विशेषता है, यदि मानवता ही नहीं तो कैसा मानव?

कुछ काव्यमय

मानवीय गुणों का संचय,
मानवता का पालन।
मानव कल्याण का भाव
और मानव-मन संचालन।
ये भले कठिन हो
पर अनिवार्य है।
इनके बिना मानव
किसे स्वीकार्य हैं ?

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

दान से होता जीवन सफल

जीवन को सार्थक बनाने के लिए सभी धर्मों में दीन दुःखियों की सेवा को सर्वोपरि कहा गया है। दान करने से न केवल जीवन में कठिनाइयों का स्वतः समाधान मिलता है बल्कि मृत्यु के बाद परलोक की यात्रा भी सुखद हो जाती है।

एक राजा अपनी न्यायप्रियता और समाजसेवा के कारण काफी लोकप्रिय था यह दरबार में नए – नए प्रश्न खड़े कर जनता और दरबारियों को जीवन को सार्थकता के लिए कोई न कोई सबक प्रायः दिया ही करता था। एक दिन उसने दरबार में पूछा कि मनुष्य मरते वक्त क्या सोचता है। और उसके बाद क्या होता है ? कोई इसका जवाब नहीं दे पाया। तब राजा ने नगर में ढिंढोरा पिटवा दिया कि जो भी व्यक्ति एक रात कब्र में रहकर दूसरे दिन मरने और उसके बाद का अनुभव बताएगा उसे सोने की पांच सौ मोहरें दी जाएंगी। जीते जी मरने के लिए कोई तैयार नहीं हुआ। राजा को इसकी सूचना दी गई। इसी दौरान एक व्यक्ति आया और वह एक रात कब्र में गुजारने के लिए तैयार हुआ। यह व्यक्ति पड़ोसी शहर का एक धनवान व्यक्ति था जिसने किसी भी दीन दुःखी की कोई सेवा न कर सिर्फ जब तक का समय धन जोड़ने में ही लगाया और अब भी वह धन के लिए ही जोखिम उठा रहा

था। उसकी अर्थी सजाई गई और दरबार से शमशान की तरफ रवाना की गई। रास्ते में एक फकीर ने अर्थी के पास जाकर मरने जा रहे व्यक्ति से कहा तुम्हारे पास रखा धन क्या काम आएगा? अब तो थोड़ा मुझे दान कर जाओ। धनवान व्यक्ति ने उसे झिड़क दिया। फिर भी फकीर उसे दान मांगते हुए उसके साथ ठेठ शमशान तक गया। जहां कब्र खोदी जा रही थी वहीं पास में अर्थी रखी गई फकीर फिर उसे कहा कि अब तुम्हारा पास समय बहुत कम है। कुछ तो पुण्य कर जाओ अर्थी में लिपटे व्यक्ति ने गुस्से से पास में पड़े कचरे के ढेर से एक मुठ्ठी भर कर फकीर के झोली मे डाल दी। यहां कचरा अखरोट के छिलकों का था। जिससे कोई वहां डाल गया था। फकीर निराश होकर चला गया कब्र तैयार होने पर व्यापारी को उसमें सुला दिया। और उपर से मिट्‌टी डाल दी गई उसके सिर की तरफ एक छेद रखा गया ताकि वह सांस ले सके पूरी कब्र मिट्‌टी पाटने के बाद लोग लौट गए। रात हुई कब्र में लेटा व्यक्ति घबराने लगा उसने अपने निर्णय पर पछतावा भी होने लगा। आधी रात बाद में उसने पुकार सुनी एक सांप कब्र के छेद में घुसने का प्रयत्न कर रहा था तभी वह छेद बंद हो जाता कभी खुल जाता दरअसल, वे अखरोट के ही छिलके थे। जो बार–बार उड़कर छेद पर आ जाते और सांप को अंदर घुसने से रोक रहे थे। रात गुजर गई छेद में से कब्र में प्रकाश के प्रवेश के साथ उसमें सोया व्यक्ति पूरे जोर के साथ उसमें से निकला और उसने देखा कि जहां छेद था वहां अखरोट के काफी छिलके पड़े हुए थे। वह समझ गया कि फकीर को दिये छिलके ही उसकी प्राण रक्षा के कारण बने। उसकी समझ में आ गया कि दान ही जीवन को सार्थक बना सकता है। सुबह राजा के आदमी उसे लेने आये वह उनके साथ न जाकर श्मशान से सीधे घर गया और अपनी सम्पति में बडा हिस्सा गरीबों में बांट दिया । उसके बाद वह राजा के पास गया और अपनी आपबीती बताई।

–कैलाश 'मानव'

विवेक का फैसला

हर व्यक्ति सफल होना चाहता है। उसका यह चाहना गलत भी नहीं है। क्योंकि मानव देह का मिलना ही बड़ा दुर्लभ है। और जब वह मिली है तो उसका सार्थक भी है। करना भी है। जीवन भी सार्थकता

अथवा सफलता उसी में है कि हम अपने निर्वाह के लिए तो परिश्रम करें ही साथ ही दूसरों के लिए ही खुशी का कारण बनें। सफलता और समृद्धि के लिए हम गोस्वामी तुलसीदास जी की चौपाई को ग्रहण करना चाहिए जिसमें वे कहते है कि परहित सरिस धर्म नहिं भाई, अर्थात् जरूरतमंदों की सेवा सबसे बडा धर्म है। आपका अपना नारायण सेवा संस्थान आपके सहयोग से इसी ध्येय को लेकर चल रहा है। सफलता के यू तो कई आयाम हैं। जिसमें भौतिक सुख सुविधाओं का अर्जन भी शामिल है। लेकिन वह एकमात्र. नहीं व्यक्ति की सफलता दूसरों के योगक्षेम के साथ जुडी हुई है। किसी भी कार्य की सफलता अकेले बल, बुद्धि और संकल्प से ही सुनिश्चित नहीं होती बल्कि उन तीनों का सम्मिलित रूप ही सफलता का श्रेय प्राप्त कर सकता है। सफलता का श्रेय किसे मिले इस बात पर संकल्प बल और बुद्धि में विवाद हो गया विवाद के हल के लिए विवेक को पंच बनाया गया। विवेक उनके साथ लौह की एक टेढ़ी कील और हथौड़ा अपने हाथ में लेकर निकल पड़ा। मार्ग में एक बालक मिला जिसने उसे कहा कि यदि तुम इस टेढ़ी कील को सीधा कर दोंगे तो तुम्हे बहुत सारी मिठाइया दूंगा बालक खुश हो गया वह बड़ी आशा प्रयत्न और कील को सीधा करने लगा। लेकिन भारी हथौड़ा उठाने लायक बल नहीं था उसे सफलता नहीं मिली। इससे निष्कर्ष निकला कि अकेला संकल्प सफलता के लिए अपर्याप्त है। थोड़ा आगे एक श्रमिक सोया हुआ खर्राटे ले रहा था विवेक ने उसे जगाया और बोला इस कील को सीधा कर दोंगे तो दस रुपये दूंगा। उनींदी आंखों से श्रमिक ने कुछ प्रयास किया पर नींद की खुमारी ऐसे थी कि हथौड़े को एक तरफ रख फिर से सो गया। निष्कर्ष निकला कि अकेला बल भी काफी नहीं है। श्रमिक सामर्थ रखते हुए भी संकल्प के अभाव में कील को सीधा न कर सका विवेक ने कहा आप तीनों को जान लेना चाहिए कि जब तक आप तीनों को सम्मिलित रूप नहीं बनेगा तब तक सफलता का स्वरूप नही बनेगा। एकाकी रूप में आप तीनों ही अधूरे अपूर्ण है।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

न केवल कैलाश वरन वहां उपस्थित कई लोगों में इस युवक को देख करुणा जागृत हो गई। कुछ लोगों ने मिलकर उसके घुटनों से खून साफ किया, कंकर हटाये और घुटनों पर कपड़े का पट्टा बांध दिया। किसी ने नी–केप के लिये पूछा मगर यहां तो किसी के पास नहीं थी। युवक बचपन से ही पोलियो पीड़ित था इसलिये उसके हाथ पांव असामान्य थे और वह अन्यों की तरह चल नही पाता था। कैलाश ने जानकारी ली तो पता चला कि इस तरह के ढेर सारे बच्चे हैं जो बचपन से ही पोलियो रोग से ग्रस्त हैं। कैलाश को अब सेवा की एक नई दिशा दिखी। पोलियो ग्रस्त बच्चों का इलाज संभव है या नहीं, तो कहां है, यह सब जानकारी एकत्र करने का उसने संकल्प किया।

मुम्बई में उसके कई परिचित थे, उन्हें इसने पूछा मगर किसी को इस क्षेत्र की ज्यादा जानकारी नहीं थी। इन्हीं में एक चैनराज लोढ़ा भी थे। उन्होंने एक विज्ञापन पढ़ा था जिसमें एलीजारोव पद्धति से किसी का छोटा पांव बड़ा किये जाने का दावा था। एक सूत्र हाथ में आ गया तो उस पर आगे बढ़ते रहे। पता लगा कि एलिजारोव एक ऑपरेशन होता है। डा. एलिजारोव रूस के प्रसिद्ध आर्थोपेडिक सर्जन थे।

एलिजारोव के बच्चे का एक पैर छोटा था, वह अपने बेटे के दोनों पैर बराबर करने की चिन्ता में रहता था। इसी चिन्ता में उसने ऐसा आविष्कार कर डाला कि पूरी दुनिया के पोलियो ग्रस्त बच्चों के जीवन में आशा का संचार हो गया। एलिजारोव ने साईकिल की रिंगों से ही उसने यह आविष्कार कर डाला। पोलियो ग्रस्त बालक के पांवों में तीन रिंगें पहनाते हैं। तीनों रिंगों को जोड़ने एक रोड़ लगाई जाती है। यह सारा कार्य एक ऑपरेशन के जरिये किया जाता है। ऑपरेशन के बाद जब स्क्रू खोलते हैं तो प्रतिदिन पांव एक एम.एम. बढ़ जाता है। यह ऑपरेशन इतना सफल हुआ कि इसका नाम ही डा. एलिजारोव पर पड़ गया।

अंश - 156

उपयोगी हैं – नींबू , अदरक व पुदीना

एंटीऑक्सीटेंड गुणों से भरपूर नींबू, शरीर की प्राकृतिक तरीके से सफाई करता है। सुबह खाली पेट नींबू पानी के साथ अदरक, और पुदीना का रस मिला लें तो ये शरीर को डिटॉक्स करते हैं। प्रदूषण के असर को घटाते हैं। अदरक में कई ऐसे गुण होते हैं जो कई बीमारियों से बचाती व पाचन ठीक रखती है। पुदीना में प्रोटीन, नियासिन, विटामिन ए, विटामिन सी, सोडियम, पोटेशियम आयरन, मैग्नीशियम, कैल्शियम आदि होते हैं। ये तत्व भी शरीर को डिटॉक्स करने का काम करते हैं।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

सिरदर्द को समझें

कई लोगों में अक्सर सिरदर्द की समस्या रहती है। यह परेशानी रोज, सप्ताह या माह मे एक बार भी हो सकती है। पेनकिलर से राहत मिल जाती है, लेकिन डॉक्टर्स का कहना है कि सिरदर्द किसी भी बीमारी का लक्षण हो सकता है। इसलिए मन से दवा लेने से समस्या गंभीर हो सकती है। दिमाग में किसी प्रकार के ट्यूमर, संक्रमण, बुखार या स्ट्रोक आदि से भी सिरदर्द होता है। अचानक असहनीय दर्द होने के अलावा, खांसने, छीकने या झुकने के दौरान दर्द होकर ठीक हो जाए तो भी दिखाए।

अनुभव अमृतम्

कोई दिगंबर हो जाता है, कोई संपदा संजो लेता है पर जाने के बाद क्या फर्क पड़ता है ? पीछे वालों ने क्या किया इससे उस आत्मा को कुछ नहीं लेना–देना। पीछे वालों ने उसका पिण्डदान किया, बारहवीं–तेरहवीं की, कितनों को भोजन कराया, उठावणे में कितने लोग आये ? इन सबका आत्मा को क्या करना ? मैं बहुत ज्यादा तो नहीं जानता कि इन सब कार्यों का मृतक के पीछे कोई महत्व है या नहीं पर यह तो जानता हूँ कि मृत्यु की आखिरी सांस लेने से पूर्व उसने जो भी पुण्यकार्य किये हैं, वे अमर रहते हैं। महात्मा बुद्ध का अंतिम समय था। कई लोग आए हुए थे। सभी दर्शन करके निकलते जा रहे थे। एक भिक्षु उनसे कुछ पूछना चाहता था पर आनंद ने उसे रोक दिया। कहा – देखते नहीं बुद्ध की अंतिम सांसें चल रही हैं, जाओ, बस प्रणाम करके निकल लो। अभी बातचीत या पूछताछ का समय नहीं है। महात्मा बुद्ध ने अपनी आँखें खोली और कहा–आनंद, इसे पूछ लेने दे। मैं अपने अंतिम क्षण तक भी यदि किसी की व्याकुलता दूर कर पाया, या उस संबंधी कोई विदया बता पाया, उसके विकारों को हटाने में सहयोग कर पाया तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी। ऐसा जीवन होता है, तभी महात्मा होता है व्यक्ति। कठिन कुछ भी नहीं होता है। सब संभव है। एक पौराणिक आख्यान आता है। कर्दम ऋषि ने अपनी पत्नी देवहुति से कहा कि इस सरोवर में स्नान कीजिये। जब वे स्नान करने जल में उतरी तो वृद्धा थीं और डुबकी लगाकर निकली तो एकदम युवती हो गई। चेहरे की झुर्रियां, सफेद हो गये केश, शरीर सौष्ठव सबकुछ बदल गया। क्या असंभव है ? कहते हैं उन ऋषि ने एक विमान की रचना की। अपनी पत्नी देवहुति जो कपिल भगवान की जननी भी थीं उन्हें उस विमान में बिठाकर ब्रह्मलोक, विष्णुलोक, गोलोक, बैकुण्ठ आदि सभी लोकों व धामों की यात्रा करा दी। कोई शंका कर सकता है कि यह कैसे संभव है ? सब संभव है, असंभव तो कुछ भी नहीं होता है।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 282 (कैलाश 'मानव')

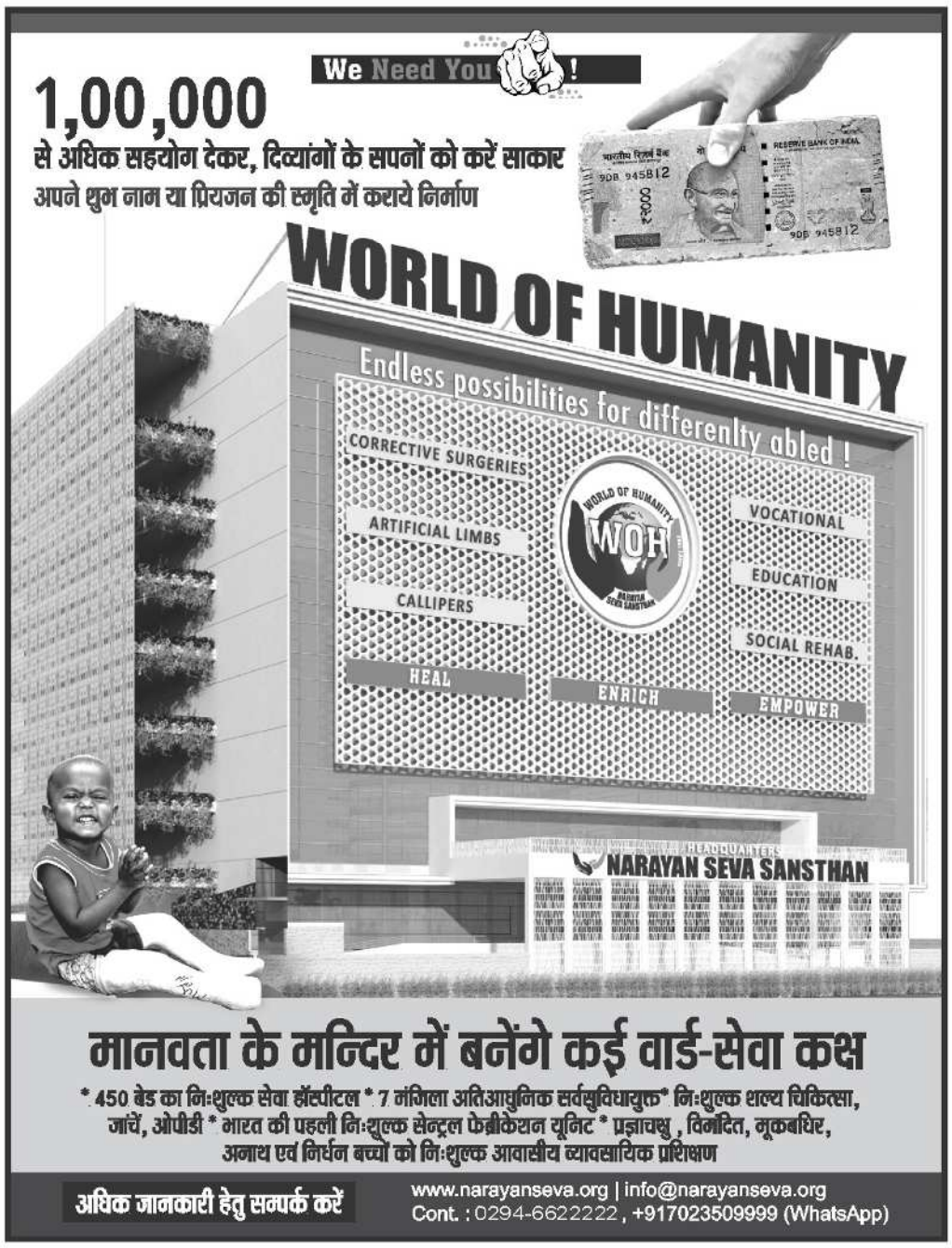

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023